मधुबन ओम् शान्ति अंक 261 अप्रैल 2014

पत्र-पुष्प

निमित्त टीचर्स तथा सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनों प्रति मधुर याद पत्र

(13-03-14)

परमप्यारे अव्यक्त मूर्त मात पिता बापदादा के अति लाडले, सदा बीती को फुलस्टाप लगाए, वर्तमान हर श्रेष्ठ कर्म को यादगार बनाने वाले, विश्व कल्याण की सेवा के निमित्त बनी हुई सभी टीचर्स बहिनें तथा देश विदेश के सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनें,

ईश्वरीय स्नेह सम्पन्न मधुर याद के साथ संगमयुग के यादगार पावन पर्व होली की सबको बहुत-बहुत दिल से हार्दिक बधाईयां।

बाद समाचार - आप सभी ने शिव जयन्ती पर खूब धूमधाम से सेवायें की। सब तरफ के बहुत उमंग-उत्साह भरे समाचार, ईमेल आदि मिलते रहते हैं। सभी ने बड़े उमंग-उत्साह से शिव जयन्ती मनाई, एक दो को बधाईयां दी, शिवबाबा के झण्डे फहराये। मधुबन में तो शिव जयन्ती पर पूरे विश्व के अनेकानेक बच्चों का संगठन होता है, सभी अव्यक्त मिलन भी मनाते तो मुख्य टीचर्स वा भाई बहिनें आपस में बहुत गहरी रूहरिहान और मीटिंग्स भी करते हैं। अभी फिर होली का पावन पर्व है। सब एक दो को खुशियों भरी बधाईयां देंगे। बुराईयों की होली जलायेंगे और फिर अपने श्रेष्ठ संग का रंग एक दो को लगायेंगे। साथ-साथ कोई भी पुरानी बीती बातों को सदा के लिए विदाई दे, बीती सो बीती कर, आपस में शुभचिंतक वृत्ति से मंगल मिलन मनायेंगे।

वर्तमान समय बापदादा भी हम बच्चों को यही इशारा दे रहे हैं बच्चे, अब व्यर्थ को समाप्त कर निर्विघ्न वायुमण्डल, निर्विघ्न वातावरण बनाओ। ड्रामा की हर सीन अच्छे से अच्छी है, उसे साक्षी हो देखते हुए सदा अचल अडोल एकरस स्थिति में रहो। कभी भी क्यों, क्या, कैसे के प्रश्नों में उलझना नहीं है। अब तो समय है अपनी शक्तिशाली मन्सा द्वारा आत्माओं को शान्ति और शक्ति देने का क्योंकि अभी माया और प्रकृति दोनों अपना अन्तिम वार अजमा रहे हैं, उसे समझते हुए अपनी सेफ्टी के साथ-साथ शुभचिंतक वृत्ति द्वारा कमजोर शक्तिहीन आत्माओं को भी मदद करनी है। अब आलस्य, अलबेलापन, अहम् बहम वा ईर्ष्या के सूक्ष्म रूपों से माया जो अपने अधीन बनाकर सम्बन्धों में दूरियां ला रही है, माया के इन बहुरूपों को समझ आपसी एकता, स्नेह और संगठन की शक्ति से परमात्म पालना का रिटर्न करना है। अब तो बापदादा की यही चाहना है और मेरी भी यही शुभ भावना है कि बाबा के सभी बच्चे एक दो की विशेषताओं को देखते हुए, बहुत-बहुत सरलचित, नम्रचित बन ब्रह्मा बाप के कदमों पर कदम रखते हुए अपने चेहरे और चलन द्वारा बापदादा को प्रत्यक्ष करें।

बोलो, हमारे मीठे मीठे भाई बहिनें अब समय की समीपता के चिन्ह देखते, उपराम वृत्ति, वैराग्य वृत्ति द्वारा सदा न्यारे और प्यारेपन के बैलेन्स से बंधनमुक्त, जीवनमुक्त स्थिति का अनुभव कर रहे हो ना! अब संगम की इन अमूल्य घड़ियों का एक एक सेकण्ड, एक एक श्वांस, एक एक संकल्प, सूक्ष्म और स्थूल सभी शक्तियां श्रेष्ठ कार्य में सफल हों, कुछ भी व्यर्थ न जाए। ऐसे एकनामी, एकानामी, एकान्तप्रिय, एकाग्रचित बन, एक बाबा दूसरा न कोई, यही पाठ पढ़ना और पढ़ाना है।

बाकी अव्यक्त बापदादा के स्नेही मूर्त को, उनकी अव्यक्त पालना और दिल के प्यार को दिल ही दिल में समाते हर बच्चे के अन्दर से यही दिल का गीत निकलता - इतना प्यार करेगा कौन....! देश विदेश में चारों ओर बाबा के बच्चे बाबा के बेहद प्यार का अनुभव करते उसी में समा जाते हैं। यह प्यार ही अनेक छोटी बड़ी समस्याओं से सहज पार करने वाला है। अच्छा -

सभी को बहुत-बहुत स्नेह भरी याद के साथ....

ईश्वरीय सेवा में,

बी.के. जानकी

ये अव्यक्त इशारे

अपने कर्मों के दर्पण से बाप का साक्षात्कार कराओ, फॉलो फादर करो

1) बाप की सदा यही आशा रहती है कि हर बच्चा अपने कर्मों के दर्पण द्वारा बाप का साक्षात्कार कराये अर्थात् हर कदम में फॉलो फादर कर बाप समान अव्यक्त फरिश्ता बन कर्मयोगी का पार्ट बजाये। यह आश पूर्ण करना मुश्किल है वा सहज है?

2) ब्रह्मा बाप सदा आदि से तुरत दान महापुण्य, इसी संस्कार को साकार रूप में लाने वाले रहे। करेंगे, सोचेंगे, प्लैन बनायेंगे... यह संस्कार कभी साकार रूप में नहीं देखे। अभी-अभी करने का महामन्त्र हर संकल्प और कर्म में देखा, उसी संस्कार प्रमाण बच्चों से भी समान बनने की आश रखते हैं।

3) ब्रह्मा बाप अव्यक्त क्यों बनें? हद से निकाल बेहद में ले जाने के लिए। ब्रह्मा बाप के स्नेह का प्रत्यक्ष स्वरूप है फालो ब्रह्मा फादर। ब्रह्मा बाप अपने राइट हैण्ड बच्चों को, अपनी विशेष भुजाओं को अव्यक्त वतन से बेहद के सेवास्थान से बाहें पसार कर हाथ में हाथ मिलाने के लिए बुला रहे हैं।

4) ब्रह्मा बाप का बच्चों से विशेष स्नेह है। तो बह्मा बाप बुला रहे हैं कि बच्चे, बेहद में आ जाओ। ब्रह्मा बाप की सदा एक ही लहर रहती है कि बच्चे मेरे समान बेहद के ताजधारी बन चारों ओर प्रत्यक्षता की लाइट और माइट ऐसी फैलावें जिससे सर्व आत्माओं को निराशा से आशा की किरण दिखाई दे।

5) बाप हर बच्चे को हर कदम में फालो फादर करने वाले समान साथी अर्थात् हमजिन्स रूप में देखते हैं। सदा यही लक्ष्य रहे कि मुझे बाप समान बनना है। जैसे बाप लाइट है वैसे डबल लाइट बनो। औरों को देखते हो तो कमजोर होते हो, आज्ञाकारी, वफादार बच्चे सदा सी फादर, फॉलो फादर करते हैं।

6) जो बाप के गुण वह बच्चों के, जो बाप का कर्तव्य वह बच्चों का, जो बाप के संस्कार वह बच्चों के, इसको कहा जाता है फालो फादर। जो बाप ने किया है वही रिपीट करना है, कापी करना है। इस कापी करने से फुल मार्क्स मिल जायेंगी। तो जो भी संकल्प करो, पहले चेक करो कि बाप समान है? अगर नहीं है तो चेन्ज कर दो। अगर है तो प्रैक्टिकल में लाओ। ऐसे बाप को फालो करने वाले ही सदा मास्टर सर्वशक्तिवान स्थिति में स्थित रहते हैं।

7) ब्रह्मा बाप अभी अभी बुजुर्ग और अभी अभी मिचनू, किशोर। देखा ना! ऐसे फालो फादर, हाँ जी करने में मिचनू बन जाओ और सेवा में बुजुर्ग। ब्रह्मा बाप जितनी जिम्मेवारी स्थूल में भी किसी के पास नहीं है। आप सोचेंगे क्या करें ऐसे वायुमण्डल में रहते हैं, वायब्रेशन खराब रहते हैं। बगुले ठूंगें लगाते रहते हैं। चारों ओर आसुरी सम्प्रदाय है। लेकिन ब्रह्मा बाप ने आसुरी सम्प्रदाय के बीच न्यारा प्यारा बनकर दिखाया ना! तो फालो फादर।

8) समय प्रमाण जिस रूप से श्रीमत मिलती है, उसी समय पर उस रूप से प्रैक्टिकल में लाओ तो सदा ही ब्रह्मा बाप समान तुरत दानी महापुण्य आत्मा बन नम्बरवन में आ जायेंगे। ब्रह्मा बाप और जगत अम्बा दोनों आत्माओं की विशेषता क्या देखी? सोचा और किया। यह नहीं सोचा कि यह करके पीछे यह करेंगे। तो फालो फादर मदर करने वाले महा-पुण्यात्मा बनो। स्वप्न में भी संकल्प मात्र भी कोई कमजोरी न हो।

9) बाप कभी किसकी कमजोरी को नहीं देखते। इशारा भी देते तो भी विशेषता पूर्वक रिगार्ड के साथ इशारा देते हैं। नहीं तो बाप को अथॉरिटी है ना, लेकिन सदैव रिगार्ड देकर फिर इशारा देते हैं। यही बाप की विशेषता सदा बच्चों में भी इमर्ज रहे।

10) साथी अर्थात् सदा साथ रहने वाले। हर कर्म में, संकल्प में साथ निभाने वाले। हर कदम पर कदम रख आगे बढ़ने वाले। एक कदम भी मनमत, परमत पर उठाने वाले नहीं। ऐसे सदा साथी का साथ निभाने वाले सदा सहज मार्ग का अनुभव करते हैं क्योंकि बाप वा श्रेष्ठ साथी हर कदम रखते हुए रास्ता स्पष्ट और साफ कर देते हैं। आप सबको सिर्फ कदम के ऊपर कदम रखकर चलना है। रास्ता सही है, सहज है, स्पष्ट है या नहीं – यह सोचने की भी आवश्यकता नहीं है।

11) जहाँ बाप का कदम है, वह है ही श्रेष्ठ रास्ता। सिर्फ कदम रखो और हर कदम में पदम लो। कितना सहज है। हर संकल्प को वेरीफाय करो – बाप का संकल्प सो मेरा संकल्प है? दुनिया वाले कापी करने से रोकते हैं और यहाँ तो करना ही सिर्फ कापी है। जब सहज, सरल, स्पष्ट रास्ता मिल गया तो फालो करो और रास्तों पर जाते ही क्यों हो? और रास्ता अर्थात् व्यर्थ संकल्प रूपी रास्ता, कमजोरी के संकल्प रूपी रास्ता, कलियुगी आकर्षण के भिन्न-भिन्न संकल्पों का रास्ता।

12) बाप समान मेहमान-निवाज़ी में सदा आगे रहना। जैसे ब्रह्मा बाप ने कितनी मेहमान निवाज़ी करके दिखाई। तो मेहमान निवाज़ी में फालो करने वाले बाप का शो करते हैं। बाप का नाम प्रत्यक्ष करते हैं। तो साथी अर्थात् हर कदम में, हर संकल्प में, बोल में साथ निभाने वाले। फालो करना अर्थात् साथ निभाना।

13) अपने प्राप्त किये हुए गुण, शक्तियाँ, विशेषतायें सबमें महादानी बनने में फ्राखदिल। वाणी द्वारा ज्ञान धन दान करना, यह कोई बड़ी बात नहीं है। लेकिन गुण दान वा गुण देने के सहयोगी बनना, यह दान शब्द ब्राह्मणों के लिए योग्य नहीं है। अपने गुण से दूसरे को गुणवान बनाना, विशेषता भरने में सहयोगी बनना इसको कहा जाता है महादानी, फ्राखदिल। ऐसा उदारचित बनना, उदार दिल बनना यह है ब्रह्मा बाप को फालो करना।

14) जैसे बाप देह में आते हुए भी विदेही स्वरूप में, विदेहीपन का अनुभव कराते हैं। ऐसे आप सभी जीवन में रहते, देह में रहते विदेही आत्मा-स्थिति में स्थित हो इस देह द्वारा करावनहार बन करके कर्म कराओ। यह देह करनहार है, आप देही करावनहार हो। इसी स्थिति को "विदेही स्थिति" कहते हैं। इसी को ही फालो फादर कहा जाता है।

15) सदा फालो फादर करने के लिए अपनी बुद्धि को दो स्थितियों में स्थित रखो। बाप को फालो करने की स्थिति है - सदा अशरीरी भव, विदेही भव, निराकारी भव। ब्रह्मा बाप को फालो करने की स्थिति है सदा अव्यक्त स्थिति भव, फरिश्ता स्वरुप भव, आकारी स्थिति भव। इन दोनों स्थिति में स्थित रहना ही फालो फादर करना है।

16) साकार रूप में कर्म सिखलाने के लिए पूरे 84 जन्म लेने वाली ब्रह्मा की आत्मा निमित्त बनी। कर्म बन्धनों से मुक्त होने में, कर्म सम्बन्ध को निभाने में, देह में रहते विदेही स्थिति में स्थित रहने में, तन के बन्धनों को मुक्त करने में, मन की लगन में मगन रहने की स्थिति में, धन का एक-एक नया पैसा सफल करने में, साकार ब्रह्मा साकार जीवन में निमित्त बने। कर्मबन्धनी आत्मा, कर्मातीत बनने का एक्जैम्पुल बने। तो फालो फादर करो।

शिवबाबा याद है ? 13-3-13 *ओम् शान्ति* *मधुबन*

"सच्चा ब्राह्मण उसे कहा जाता जिसके अन्दर पवित्रता का बीज पड़ा हो, जो शुभचिंतन करता हो और सबके प्रति शुभचिंतक हो"

(दादी जानकी)

ओम् शान्ति के बाद बाबा की मीठी-मीठी बातें सुनाने जी चाहता है। दिल से निकलता है शुक्रिया बाबा, आपके जो महावाक्य हैं उसका जो मनन चिंतन है कितना सुखदाई है! बाबा के महावाक्यों का चिंतन करने के सिवाए और कोई चिंतन मन में आता ही नहीं है। इस सभा में कोई ऐसा है जिसके मन में और चिंतन हो सिवाए बाबा के महावाक्यों के? कोई चिंतन नहीं, देखते हुए नहीं देखो, सुनते हए नहीं सुनो! यह कान, यह मुख, यह आँखें तीनों में ही हाथ और पाँव का कनेक्शन अलग है। हाथ, पाँव, कान, नाक, आँख सभी कर्मेन्द्रियों को देखें, जो दिल में मन में बात है उसी अनुसार ही यह हाथ चलता है। सेवा भले हाथ से करते हैं, पाँव से कहाँ जा रहे हैं, क्यों जा रहे हैं? तो बुद्धि बताती है सोचना, फरिश्ते सिर्फ चलते नहीं, पर ब्राह्मणों को चलना है और हाथों से कुछ काम करना है, बनना फरिश्ता है। तो फरिश्ता बनने के लिए हमारा यह हाथ और कोई काम करेगा ही नहीं, फरिश्ता वह जिसके पाँव धरती पर नहीं हैं। तो ब्राह्मण लाइफ में इतनी प्युरिटी, पीस, लव, हैपीनेस के अलावा और कुछ नहीं है, तो लगता है फरिश्ता बनना मेरे लिए आसान है। और अब नहीं बनेंगे तो कब बनेंगे।

मैं ब्राह्मण हूँ, ब्रह्मा मुख वंशावली हूँ। भले शिवबाबा मेरा बाबा है, भोलानाथ है पर मुझे बनना है तो ब्रह्मा बाबा को देखके बनना है। मुख ब्रह्मा बाबा का है, उनसे पैदा हुए हैं। सच्चे ब्राह्मण हैं। भगवान के महावाक्यों का जो मनन चिंतन नहीं करता है, दूसरों को नहीं सुनाता है तो वो ब्राह्मण कैसा है? सच्चा ब्राह्मण माना ज्ञान-योग से जीवन कितनी ऊंची बनती है, इसका महत्व न रखने के कारण लाइफ एकदम डिफरेन्ट हो जाती है इसलिए कोई भी बात में कुछ भी होता है तो अटेन्शन रखो कि ऐसी कोई भूल न हो जिससे हमारी लाइफ की क्वालिटी शर्मसार हो। सच्चा ब्राह्मण एक उदाहरण रूप बनता है, सबके लिए मिसाल बनें, सबका कल्याणकारी बनें। थोड़ा टाइम के

लिए बैठ सोचो कि एक्यूरेट ब्राह्मण की लाइफ क्या है? अपने जीवन को देखो। उदाहरण रूप ब्राह्मण बनना है तो उसके लिये जो बाबा खिलाता है, जैसा खिलाता है, जैसा सुलाता है... वैसे करते रहना होगा। बाबा के कहने के आधार से उदाहरण रूप बन सबका उद्धार हो, यह भावना हो। पहले बाबा का आधार लेना है फिर औरों को आधार देना है ताकि वो आत्मा भी उदाहरण रूप बन जावे, यह है शुभ चिंतन में रहना। अभी पूछो अपने आपसे मैं ऐसा ब्राह्मण हूँ? ब्राह्मण माना शुभ चिंतन। ब्राह्मण माना औरों के भी शुभ चिंतक।

जैसे दुनियावी नाम के ब्राह्मण हैं, पर चलन नहीं है, यहाँ तो ब्राह्मण उसी को कहा जाता है जिसके अन्दर पवित्रता का बीज अच्छा पड़ा हुआ हो। प्युरिटी में ही पीस है। जो दृष्टि वृत्ति में पवित्र है इसलिए पहले लिखते थे, बी होली बी राजयोगी। अगर पवित्रता की गहराई में जायें तो समय अनुसार बहुत ही अच्छा लगता है। और सब बातों को समेटके पवित्रता की शक्ति को बढ़ाते चलो। सेवा भी संकल्प की शुद्धि (पवित्रता की गहराई) से करो तो हल्के रहेंगे, खुश होंगे क्योंकि बिना सेवा के खुशी कहाँ से आयेगी? भले कितना भी कहे मैं बाबा को याद करता हूँ, कई हैं जो अपने आपको ठग लेते हैं। इस पुराने शरीर को भी भगवान ने पवित्रता की शक्ति से चलाया है इसलिए बाबा ने एक बारी कहा कि बच्चे चल रही हो तो मैं चला रहा हूँ। अगर मैं कहूँ मैं कैसे चलूँ? बाबा मैं क्या करूँ? ऐसे कहते कहते मेरा क्या हाल होगा? अन्तिम जन्म में बाप की श्रीमत पर चलने से हमारी अन्त मते सो गति अच्छी हो रही है। तो बाबा को नज़रों में रखते हैं तो और कोई बात नज़रों में नहीं आती है, बाबा को दिल में रखो तो और कोई बात दिल में नहीं आती है क्योंकि बाबा का बनने से एकदम दृष्टि, वृत्ति ऐसी हो जाती है जो और कुछ अच्छा नहीं लगता है। भले कितनी भी सेवा करो पर ऐसे नशे में रहो कि मैं कौन हूँ? किसकी हूँ? उसके अन्दर का हाल बहुत अच्छा है। कभी क्या करूँ, कैसे करूँ, टू मच है... ऐसी भाषा बोलने वाले को बेहाल कहा जाता है। बाबा की नज़रों से सब "ीक हो जाता है, जो उसके नजदीक आता है वो भी निहाल हो जाता है, तो ऐसे नज़र से निहाल करने वाले को स्वामी कहा जाता है। तो सब भाई बहनों प्रति मेरी भावना है कि सब सेवा करें लेकिन अन्दर ही अन्दर जो बाबा ने हमको अपना बनाके मुस्कराना सिखाया है वो भूले नहीं, उसकी प्रैक्टिस रह न जावे। इससे कोई बात में मुश्किल आयेगी तो भी मुस्कराने की प्रैक्टिस से सब मुश्किलें आसान हो जाती हैं। तो हर समय सेवा करते मुस्कराते रहो। ऐसे बाबा को याद करने से सुख मिलता इलाही है। अच्छा।

"भावना से निश्चय का बल जमा होता है, भावना रखने से सेवा भी सहज हो जाती है"

(दादी जानकी)

ओम् शान्ति के अनुभव का अर्थ बहुत बड़ा है, उससे जो प्राप्ति है वो नेचुरल चलते फिरते मैं आत्मा हूँ, बाबा की हूँ। यज्ञ में बाबा के बच्चे बनने से कितना अच्छा भाग्य सेवा का मिला है। तीनों बातों का आधार अपनी स्थिति पर है। सेवा में बाबा की याद हो तो बड़ा अच्छा भाग्य है और परिवार के साथ सम्बन्ध में होते बड़ा मिलनसार रहें, बड़ा भाग्य है। मन्सा, वाचा, कर्मणा तीनों मेरे श्रेष्ठ हों तो पदमापदम भाग्य है।

हमारी लाइफ भावना से चली है, बाबा कौन है, यह पहचानने से भावना बहुत अच्छी रहती है। भावना है तो पढ़ाई भी बहुत अच्छी लगती है। भावना है तो जो सेवा मिलती है उसमें हाँ जी करते हैं। भावना है और सदा हाँ जी कहा है, तो बाबा सदा हमारे सामने हाज़िर है। अब भगवान मुझे कहे मैं तुम्हारे सामने हाज़िर हूँ। सारी सेवा में, सारे ब्राह्मण लाइफ में भावना से, भगवान ने अपना साथी बना करके, साक्षी हो करके पार्ट प्ले करने का जैसे वरदान दिया है। भावना है तो सेकेण्ड में बीजरूप स्थिति में स्थित हो सकते हैं। जैसे बीज है छोटा-सा, उसको जानने पहचानने से हमारी भी ऐसी स्थिति बीजरूप बन जाती है। कोई भी कारण से संकल्प आयेगा भी तो वह सेकण्ड में मर्ज हो जायेगा। कैसी भी सीन सामने आयी, सेकण्ड में मर्ज करने से जो हमारी पर्सनल वैल्युज़ हैं वो लाइफ में इमर्ज हो जाती हैं। वहाँ बीजरूप स्थिति में मर्ज कर देते हैं, तो हमारी स्थिति बीजरूप रहे, एकदम चमकता हुआ स्टार रहे। भावना से ऐसी स्थिति बनाने का भाग्य मिला है। तो नेचुरल उस निज स्थिति (पवित्रता, सुख-शान्ति, प्रेम, शक्ति) में स्थित हो सकते हैं, इस भावना से यहाँ तक पहुँचे हैं।

भावना की गहराई में जाने से निश्चय का बल जमा होता है। अगर भावना पूरी नहीं है तो अन्दर से बाप में, चाहे खुद में निश्चय नहीं होता है। बाबा ने तो देह, सम्बन्ध से न्यारा बना

दिया, भावना से कोई भी देहधारी तरफ कोई आकर्षण नहीं हुई होगी, न ही कोई वैभवों की आकर्षण हुई। अगर इतनी श्रेष्ठ स्थिति बनाने की भावना नहीं है तो फल नहीं मिलता है। भावना का फल है बल। उसी घड़ी कैसी भी कण्डीशन हो पर भावना है, भावना से जो प्राप्ति है, वो जैसे मुझे चला रही है, सेवा भी भावना ही कर रही है। अगर मेरी स्थिति थोड़ी नीचे ऊपर है और मेरा शरीर छूट जाए तो मेरी अन्त मति सो गति क्या होगी? पद कम मिलेगा। ऐसे जो बाबा के महावाक्य हैं वो दिल को लगते हैं, समझते हैं बाबा ने इतनी अच्छी श्रीमत दी है और जिसे अन्त मते का ख्याल है, अन्त मते अच्छी तब होगी जब बहुतकाल से श्रीमत पर चले हुए होंगे, यह भी भावना है। कोई परचिंतन नहीं, कोई दिलशिकस्त भी नहीं हैं, पुरुषार्थ तो बहुत करते पर फल इतना नहीं मिलता तो थोड़ा निराश होते, तो यह भी नहीं हो। यह भी भूल है, जो कोई कारण से कोई निराश हो जावे। हमारी भावना है, बाबा ने जो उम्मीदें हमारे में रखी हैं सब पूरी होंगी। हिम्मत, विश्वास, सच्चाई है, भावना है, पर फिर भी औरों को यह कलम नहीं लगता है तो दोष किसका? उनका नहीं है।

जैसे अभी गुल्जार दादी में सभी की भावना है ना, उनको देख करके ही बाबा याद आता है। प्रैक्टिकली उसको देखते हैं तो हमारे में भी पर्सनल वैल्युज़ इमर्ज हो जाती हैं, वो भी भावना से। भावना से प्राप्ति अच्छी हो जाती है। अच्छा।

"पुण्यात्मा बनने के लिए सदा उमंग-उत्साह में रहो, भाव-स्वभाव के चक्कर-टक्कर से फ्री रहो"

(दादी जानकी)

शान्तिवन के सुन्दर संगठन में बैठे कौन-से शब्द उच्चारण करें, वैसे बाबा कहते हैं तुम्हारे मुख से ज्ञान रत्न ही निकलें। अभी कौन-से रत्न निकालूँ? ज्ञान रत्न हैं तो योग क्या है? योग से शान्ति, शक्ति का वायुमण्डल ऐसा पॉवरफुल हो जो वहाँ बैठे शान्त हो जायें। योग की यह कमाल है, संगठन के स्नेह की कमाल है। इस उमंग-उत्साह से पुरुषार्थ में मेहनत नहीं लगती है। भाव स्वभाव की बात बोलने से बहुत मेहनत लगती है। क्या करूँ, कैसे करूँ... यह संकल्प आने से उत्साह खत्म हो जाता है। हम मेहनत करें यह बाबा को अच्छा नहीं लगता है। मोहब्बत है तो मेहनत नहीं लगती है। हम सदा खुश रहें तो मेहनत नहीं है इसलिए खुश रहना, खुशी बाँटना, उस खुशी में बाबा ने कितना कार्य किया है, करा रहा है, सब सहज लग रहा है क्योंकि बाबा ने किया है, हमको और कुछ दिखाई नहीं पड़ता है।

सारी यज्ञ की हिस्ट्री को देखते हैं तो बाबा ने प्यार किया, प्यार में जो शब्द उच्चारण किये उसको अमल में लायें। बाबा बाप, टीचर, सतगुरू तीनों रूप से एक ही टाइम सब काम करता है। फिर हम भी वन्डरफुल हैं, तीनों से ही फायदा लेने में होशियार हैं। अभी बाबा पहले बच्चों को नमस्ते करता है। वैसे बच्चों का काम है बाबा को नमस्ते करना। कमाल बाबा की है जो ऐसा योग्य बनाया है। फिर बच्चों की कमाल है जो बाबा के हर सम्बन्ध का फायदा लिया है। जैसे डायरेक्ट आटे को कोई खा नहीं सकता है लेकिन उसमें पानी मिलाओ, उसकी प्यार से रोटी बनाओ फिर उस आटे को खा सकते हैं, तो यह है प्रेम। ऐसे ही ज्ञान हिंडोले में, प्रेम के झूले में झूलेंगे तो सुधबुध भूल जायेगी। जो काम की बातें नहीं हैं वो सब भूल जायेंगी।

पुरानी और पराई बात को थोड़ा भी याद करना माना अपना शत्रु बनना। कोई किसका शत्रु नहीं है, शत्रु है तो पराई बात और पुरानी बात। आपस में कोई फालतू बात करे तो बाबा को बिल्कुल अच्छा नहीं लगता था और वो बाबा के आगे आ भी नहीं सकते थे। सदा ही क्या बात करनी है? मैं कौन हूँ, मेरा कौन है, पहले घर जाना है फिर उसके बाद सुखधाम में आना है... बस, ज्यादा बात नहीं करनी है। शुद्ध, शान्त, श्रेष्ठ आत्मा बनके जाना है। कर्मबन्धन सब हिसाब-किताब खलास करके, फ्री हो करके हम न्यारे हो करके जा रहे हैं, देह यहाँ हम वहाँ। जीते जी मरे हैं, बाबा के बने हैं, यह जन्म अमूल्य है। यह ईश्वर के बच्चे हैं, माता-पिता, शिक्षक, सतगुरू के सामने बैठे हैं। वो अपने जैसा बना रहा है। कभी नहीं सोचा हमको कोई बाप समान बनना है। अभी हर रोज़ बाबा पाठ पक्का कराता है कि बाप और तुम्हारे में कोई अन्तर न हो, बाप समान बनो। पवित्रता, सुख, शान्ति, प्रेम, आनन्द में मगन रहो यही लगन रहे।

सन्यासी भी पवित्रता धारण करते हैं पर योग बल नहीं है, हमारी पवित्रता में योग बल है तो हमारे इस बल का बहुत महत्व है। बाबा ने ऐसी आँखें दी हैं, ऐसी अच्छी बुद्धि दी है जो

जितने बाबा के गुण हैं वो सब धारण करके गायन लायक बन रहे हैं। बाबा ऐसा है, बाबा ऐसा है, सिर्फ यह गायन नहीं करो। बाप के गुणों को जीवन में धारण करके ऐसे गुणवान बनो। गुणवान बनने के लिए रोज़ बाबा की मुरली मिलती है - कोई अवगुण न हो, आवाज से नहीं बोलो, मीठा बोलो। देवतायें कोई गुणवान बनने का पुरुषार्थ नहीं करेंगे, देवताओं की भले मन्दिरों में पूजा होती है। हमारी पूजा नहीं होती है पर गुणवान अभी हम बनते हैं। तो पदमापदम भाग्यवान हैं जो हम गुणवान बन रहे हैं। ईश्वर के गुण धारण कर रहे हैं, जितना धारणा करते हैं उसी अनुसार पद पाते हैं।

मैंने तो सदा बेफिक्र बनने का अटेन्शन रखा है, कभी कोई फिकर में टाइम नहीं गँवाया है। मैं कौन? मेरा कौन? इसी स्मृति में रहो क्योंकि हम स्मृति में रहेंगे तो मेरे को देख और रहेंगे इससे पुण्य का खाता जमा हो जायेगा। तो पुण्यात्मा बनने के लिए स्मृति में रहो, उमंग-उत्साह में रहो। कोई भाव-स्वभाव के चक्कर-टक्कर से फ्री रहो। एक है जैसेकि यह बहुत अच्छा है, यह बहुत अच्छा है, इस भाव से चक्कर में आना, दूसरा है टक्कर में आना, तो चक्कर और टक्कर से फ्री होना है। तो आज सच्ची दिल से साक्षी हो करके बाबा को सामने रख करके भले हमको लगता है कि कोई देखता नहीं, पर बाबा कहे मैं सब देखता हूँ, बाबा सदा ही देखता है कि कौन चक्कर और टक्कर में बहुत टाइम गँवाता है, यह बहुत सूक्ष्म है। जो अच्छा लगता है, उनसे अच्छी बनती है, जिससे नहीं बनती है, टक्कर किसी के साथ है तो सारा दिन मुँह ऐसा है...।

हम ब्राह्मण ब्रह्मा मुख वंशावली हैं, तो ब्रह्मा बाबा के मुख और हम बच्चों के मुख में कोई अन्तर न रहे क्योंकि बच्चे के मुख से पता चलता है यह किसका बच्चा है। तो ब्रह्मा मुख वंशावली हैं, उसके बच्चे हैं तो यह बैठके रिहर्सल करनी है। ब्रह्मा बाबा को एक दो बच्चे नहीं हैं, औरों को कहते हैं बर्थ कन्ट्रोल करो पर ब्रह्मा मुख से हजारों, लाखों बच्चे पैदा हुए हैं। न सिर्फ बच्चे पैदा किये, पर पालना किया है, उनको पढ़ाया है, उनको लायक बनाया है तब तो नई दुनिया में आ करके राज्य करेंगे। बने बनाये महल मिलेंगे, हम वहाँ महल बनायेंगे नहीं, बने बनाये मिलेंगे। परन्तु अभी भगवान के घर में, खटिया कुटिया मिली हुई है, बस, दो रोटी खाना शिवबाबा के गुण धारण करना। जितना खाना है उनसे ज्यादा सेवा करनी है, तो फल अच्छा मिलता है। ब्रह्मा भोजन है ना। लेकिन सबसे बड़ा नुकसान है जो अच्छा लगता है वो खूब खाते रहेंगे, ये खाऊं, वो खाऊं... यह हबच (लालच) यहाँ नहीं कर सकते हैं। अरे, जीभरस कनरस ये बहुत नुकसानदायक हैं। खाऊं, खाऊं पेट में बलाऊं... यह बला है। क्या खाना है, शान्ति से बैठके ब्रह्माभोजन खाना है क्योंकि ब्राह्मण हूँ ना! बाबा ने कहा है जो कुछ हो रहा है सो अच्छा है, जो होगा अच्छा ही होगा, गैरन्टी है। जो हो रहा है सो अच्छा, जो होगा सो अच्छा, यह शब्द कभी भूलना नहीं है। ओ.के. ओम् शान्ति।

11-9-13

"अपने भाग्य को देखते सदा खुशी में रहो, सदा खुश रहना हमारा धर्म है"

(गुल्जार दादी)

सभी ने दिल से प्यार से योग लगाया माना बाबा को दिल में रखा। सबके दिल में कौन था? मीठा बाबा। बाबा को देख अपना भाग्य याद आता है कि भगवान कितना ऊंचे ते ऊंचा और उसने हमको अपना बना दिया। कभी ख्वाब में भी नहीं था कि इतना भाग्य हमारा नूँधा हुआ है। लेकिन हमारा ही भाग्य था जो बाबा ने हमको अपना बच्चा बना दिया। एक जन्म में 21 जन्मों की गैरंटी हम सबको बाबा ने दिया है। गैरंटी है आप 21 जन्म सदा सुखी और सदा खुश रहेंगे। ड्रामा में इतना बड़ा भाग्य नूँधा हुआ है, यह पता ही नहीं था और मिला भी बहुत सहज। तो ऐसा भाग्य हम सबको दिया है इसलिए सदा खुश, हम भगवान के बच्चे भी अगर सदा खुश नहीं रहेंगे तो और कौन रहेंगे? बाबा सदा मुस्कुराता हुआ चेहरा देखना चाहते हैं क्योंकि बाबा ने हमको ऐसी खुशी दी है जो जा ही नहीं सकती है। तो सब बाबा के गुण गा रहे हैं ना। खुश रहना यह तो अभी हमारा धर्म हो गया है। अभी यह कहने की जरुरत नहीं पड़े कि खुश रहो, खुश करो क्योंकि अभी संगम पर हमें बाबा मिला, मम्मा मिली, दादियाँ मिली सब मिलें... अब भी खुश नहीं रहेंगे तो कहाँ और कब रहेंगे? इसलिए सदा खुश

रहने की बात हमारी नहीं भूलना।

अभी बाबा कहते हैं फरिश्ता बनो, संगमयुग का अन्तिम लक्ष्य है फरिश्ता बनना। फरिश्ता माना ही एकदम उड़ने वाला। जिसका कोई भी देहधारी या देह के चीज़ों से रिस्ता नहीं, वो है फरिश्ता। सब बच्चे ऐसे खुशनुमा: दिखाई देंगे जैसे फरिश्ते हैं। अब ऐसी स्थिति बनाने का शौक होना चाहिए।

व्यक्तिगत रूहरिहान में भाईयों के प्रश्न - गुल्जार दादी के उत्तर

जब काम में लग जाते हैं तो याद का अटेन्शन कम हो जाता है। काम में अटेन्शन थोड़ा ज्यादा रहता है इसलिए जो शुरूआत की अनुभूति है वो गुम हो जाती है। योग का अटेन्शन कम हो जाता है। वह कॉमन बात लगती है। स्थूल कामों में बुद्धि जल्दी जाती है। लेकिन यह (योग) बुद्धि का काम है।

प्रश्न:- दादी जी, कर्मयोगी बनने के लिए क्या करना चाहिए? कर्म करते क्या संकल्प करें?

उत्तर:- प्रैक्टिस करनी चाहिए कि मैं आत्मा करावनहार इन कर्मेन्द्रियों से कर्म करा रही हूँ क्योंकि ज्ञान तो है लेकिन काम शुरू करते समय अटेन्शन होता है फिर काम में ही बुद्धि ज्यादा लग जाती है, याद की तरफ थोड़ी कम हो जाती है। इसके लिए कर्म करते समय बीच-बीच में चेकिंग करें कि मैंने तो कर्मयोगी बनके कर्म करना शुरू किया था। तो मेरा कर्मयोग है? ऐसे चेकिंग बीच-बीच में करनी चाहिए। कर्म मोटी चीज़ है, वह आकर्षण कर लेता है, प्रैक्टिस है बहुत जन्मों की तो उस तरफ बुद्धि जल्दी चली जाती है इसलिए बीच-बीच में अटेन्शन, मतलब मुझे बुद्धि को स्थूल में जाने नहीं देना है। बीच-बीच में जैसे काम करते, काम को ठीक करते हैं, चेक करते हैं वैसे योग को भी चेक करें। कर्मयोगी बनना है तो अटेन्शन देना पड़ेगा।

प्रश्न:- दादी जी, योग में 3-4 स्टेज आती हैं, एक है मनन कर रहे हैं, बाबा से रूहरिहान कर रहे हैं, दूसरा है डबल लाइट हैं, तीसरा बाबा समान बिन्दू रूप में स्थित हैं, तो कर्म के समय में कौन-सी स्टेज रहेगी?

उत्तर:- जब योग में बैठते हैं तब हो योग की फर्स्ट स्टेज होनी चाहिए। कर्म में तो डबल स्टेज होगी। कर्म के तरफ ध्यान देना पड़ेगा लेकिन ज्ञान का मनन चिंतन, रूहरिहान सहज हो सकती है। थोड़ा सा अटेन्शन देंगे तो कर्म में योग सहज हो जायेगा। कर्म में आने की तो जन्म जन्म की आदत पड़ी हुई है तो वो सहज खींच लेती है। जब तक योग नेचरल हो जाए तब तक थोड़ा अटेन्शन देना पड़ेगा क्योंकि इतने जन्म तो बॉडीकान्सेस में रहे हैं ना। मैं आत्मा हूँ, इन कर्मेन्द्रियों से कर्म करा रही हूँ, यह स्मृति सहज रह सकती है।

प्रश्न:- दादी, बाबा कभी-कभी योग की स्टेज बताते हैं कि जब बच्चे तुम योग में बैठोगे और जब तुम्हारा योग यथार्थ होगा तो दूसरी कोई भी आवाज़ें आपको सुनाई नहीं देंगी, मुरली सुनना भी बन्द हो जायेगा... इतना योग पॉवरफुल हो जाये जो दूसरी कोई भी आवाज़ मन को डिस्टर्ब न करे। एक दिन बाबा ने कहा कि मुरली सुनना कोई योग नहीं है....

उत्तर:- मुरली के समय तो मुरली सुनना चाहिए ना। मुरली सुनने के टाइम योग लगाने की कोशिश भी नहीं करनी चाहिए। योग लगाने लगेंगे तो मुरली तो मिस हो जायेगी ना। जिस समय जो काम करना है उसमें अटेन्शन देना चाहिए। बाबा से मुरली सुन रहे हैं, सुनाने वाला बाबा है। अभी मुरली सुनने के लिए बैठे हैं वो भी तो एक्यूरेट होना चाहिए ना। अगर योग करेंगे तो बुद्धि में वह बात जा रही है या नहीं। मुरली की बातें बुद्धि में बैठती नहीं हैं तो मुरली सुनें या पढ़ें ही क्यों! जब फुर्सत मिले तब पढ़े ना इसलिए जिस समय जो काम करें वो एक्यूरेट होना चाहिए। मुरली चलने के समय में अगर हम योग लगा रहे हैं तो यह भी राँग है क्योंकि मुरली पूरी बुद्धि में तब जायेगी जब अटेन्शन होगा।

प्रश्न:- बाबा तो कहते हैं जो शब्द मुरली में आता है उसका अनुभव करो, जैसे बाबा ने कहा आत्मा हो तो आत्मा समझके मुरली सुनो, तो दादी यह भी तो योग हो जायेगा ना...।

उत्तर:- वो ठीक है, वह तो बाबा कहता है और हम उस अनुभव में चले गये। बाबा ने कहा, उस समय ही वह अनुभव किया। बाकी पीछे भी वही अनुभव चले, तो फिर तो मुरली मिस होगी। जिस समय जो काम कर रहे हैं, उस समय उस विधि से वो काम होना चाहिए। मुरली सुनने के टाइम योग लगा रहे हैं, यह क्या मतलब है! वैसे योग लगाओ ना। इतना टाइम तो मिलता है। यह आदत पड़नी चाहिए, हम लोगों की यही तो आदत पड़ गई है, मुरली के टाइम मुरली सुनेंगे और योग के टाइम योग करेंगे।

प्रश्न:- दादी, साकार में बाबा जब योग का अभ्यास कराते थे या मुरली चलती थी तो बाबा की इतनी ऊंची स्थिति हो जाती थी कि घड़ी की टिक-टिक का आवाज़ भी अच्छा नहीं लगता था। एक बार बाबा ने कहा बच्ची यह घड़ी बाबा को योग में बहुत डिस्टर्ब करती है, तो दादी वह कौन सी स्थिति है?

उत्तर:- इसके लिए बहुत प्रैक्टिस चाहिए और वो स्थिति तो योग की ही होगी, अपने को आत्मा समझें और अशरीरी हो जाएं, यह प्रैक्टिस बहुत चाहिए। बाबा यह भी कहते हैं बच्चे ऐसा योग नहीं लगाओ जो गुम हो जाओ और काम ही रह जायें फिर तो डिस्टर्बेन्स होगी। अभ्यास चाहिए कि जिस समय जो करना है, वही सोचें, उसी स्थिति में स्थित हो जाएं। अच्छा।

दादी प्रकाशमणि जी के अमृत वचन

परिवर्तन शक्ति से स्वयं को ट्रांसफर करो

1) हम सभी को बाबा कहते लक्की स्टार बच्चे। हमारा कल्प पहले का लक ड्रामा में नूंधा हुआ है। हम अपनी तकदीर लेकर आये हैं। हम शिव वंशी ब्रह्माकुमार कुमारी फिर विष्णुवंशी बनते हैं। इसमें ही सभी क्लासेज़ का सार है। आज बाबा की मुरली में था तुम बच्चे यहाँ ट्रांसफर होने आये हो। परिवर्तन होने आये हो। तो रोज़ अपने से पूछो - मैं परिवर्तन हुआ हूँ! मेरे में परिवर्तन करने की शक्ति है। हम पहले तो पुरानी दुनिया से नई दुनिया में ट्रांसफर हुए। फिर भक्ति से ज्ञान में ट्रांसफर हुए। भक्ति के संस्कार हैं ही देह-अभिमान के। देह-अभिमान के कारण ही दु:खी हो पुकारा क्योंकि रावण ने उतरती कला में लाया। तो पहले हमारे संस्कार परिवर्तन हुए। देह-अभिमान के साथ सब दुर्गुण अवगुण भी प्रवेश हो गये। तो हरेक यही चार्ट देखना कि मैं कहाँ तक परिवर्तन हुआ हूँ!

2) सृष्टि के साथ-साथ जीवन चक्र भी परिवर्तनशील है। अभी मेरी बैटरी फुल होती जा रही है, ऐसा तो नहीं आज फुल नशा चढ़ा हुआ है, कल छोटी मोटी बात हुई तो डाउन हो जाए। फिर कहेंगे हम तो जाते हैं अपने लौकिक में, ऐसा कहना भी सिद्ध करता अलौकिक के बने ही नहीं। मरजीवा बने ही नहीं। उनका नशा जैसेकि बालू की ढेर पर है। जरूर वह खिसकेगा इसलिए उसे सीमेन्ट की दीवार दे दो तो उतरे नहीं। आज मैने बहुत अच्छा भाषण किया, तीर लग गया। मुझे नशा चढ़ गया। अगर मैं दो चार दिन सेवा नही करता तो मेरी खुशी गायब हो जाती। आपस में दो चार दोस्त मिले तो खुश, अगर नहीं मिले तो खुशी गुम। यह सब कौन सी स्थितियां हैं? अज्ञानी तो करते लेकिन ब्राह्मणों में भी ऐसी बहुत माया है। वह कहेंगे मेरी ब्राह्मणी अच्छा क्लास कराती, तुम मेरे क्लास में आना। वह कहेंगी तुम वहाँ क्यों गये! फिर चला परचिंतन का चक्र। यह भी उल्टा चक्र है। सेवा करने जायेंगे, भावना होगी दूसरे के कल्याण की। अन्दर में चलेगी पार्टीबाजी। कई बार बाहरी रूप बहुत अच्छा होता, अन्दर में चलेगी मीठी-मीठी छूरी – कभी आंख से तो कभी मुख से। ब्राह्मणों के लिए यह शब्द भी शोभता नहीं है।

3) सबसे अच्छा गुण है, सदा बाबा की एक लगन में रहकर इन्डिपेन्डेंट रहो परन्तु इसका यह भाव नहीं कि मैं तो अपना सब कुछ करूंगा, नहीं। आत्माओं पर डिपेन्ड नहीं करो लेकिन बाबा पर डिपेन्ड करो। रहना तुम्हें संगठन में है, ऐसे भी नहीं मेरा तो किसी से कनेक्शन नही। निर्माण बनो। निर्माणता के लिए हमें यह दो हाथ मिले हैं। निर्माण बनकर हमें संगठन में चलना है। यह पक्का-पक्का वायदा करो।

4) अन्दर में जो कभी-कभी हलचल होती शादी करें या न करें! यह थोड़ी भी हलचल मार डालेगी। अब हलचल को समाप्त करो। मुर्दे के अन्दर हलचल होती है क्या! हम पुरानी दुनिया से मुर्दे हो गये। कहते हैं संस्कार परिवर्तन नहीं होते। मैं कहती हो गये तब तो आये हो। माया ने छोड़ा तब तो बाबा के पास पहुंचे। माया बिचारी ने तुम्हें छुट्टी दी तब तो यहाँ तक पहुंचे हो। बाबा की गोद मिली है इसलिए कोई ऐसे संस्कारों की हलचल उठाओ ही नहीं। नींद नहीं आती, आप बाबा को याद करो। मुरली पढ़ो, यह तो अच्छी बात है, जागती ज्योति बनो। माया से चिढ़ते क्यों हो! चिढ़ते हो तो वह और चिढ़ाती है।

5) (एक ऋषि की कहानी) उसने कहा स्त्री का मुंह नहीं देखूंगा। एक अप्सरा ने कहा मैं बताती हूँ.... उसने झोपड़ी के पास जाकर खूब ज़ोर से चिल्लाया, ऋषि आवाज सुन बाहर आया उसे तरस पड़ा, उसने उठाया, देखते ही उसकी वृत्ति खराब हो गई। उसने थप्पड़ मारा बोला, तुम तो कहते थे हम स्त्री का मुंह नहीं देखेंगे फिर यह क्या करते हो! देखा तो मरा। तो हम भी मुर्दों को क्यों देखें! अगर आप एक आंख से देखेंगे तो वह चार आंख से देखेंगे। तंग होंगे तो वह तंग करेंगे।

6) सच्ची दरबार में आये हो - जो भी किचड़ा हो दे दान.... देहधारी को हाथ लगाना, माना बिच्छू को हाथ लगाना। हमारी चंचलता बाबा ने समाप्त कर दी। बाबा ने हमें अचल बनाया। हम बाबा के अंगद बच्चे हैं। आपस में भी हाथ न लगाओ, बहुत खबरदार रहना है। अगर किसी को टच करते तो बाबा टच नहीं कर सकता इसीलिए डोन्ट टच। ऐसे पक्के योगी ब्रह्माचारी बनकर रहो तब कहेंगे ब्रह्माकुमार, ब्रह्माकुमारी। अच्छा - ओम् शान्ति।